ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class -VI
Subject- Hindi Second Language
Topic- वह चिड़िया जो (कविता)

By-Anu Bala

पाठ -1- वह चिड़िया जो (कविता)

कवि - केदारनाथ अग्रवाल

CBSE Class 6th (Hindi)

वह चिड़िया जो

जीवन परिचय

1. वह चिड़िया जो

वह चिड़िया जो–
चोंच मारकर
दूध–भरे जुंडी के दाने
रुचि से, रस से खा लेती है
वह छोटी संतोषी चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे अन्न से बहुत प्यार है।

वह चिड़िया जो–
कंठ खोलकर
बूढ़े वन–बाबा की खातिर
रस उँडेलकर गा लेती है
वह छोटी मुँह बोली चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे विजन से बहुत प्यार है।

वह चिड़िया जो–
चोंच मारकर
चढ़ी नदी का दिल टटोलकर
जल का मोती ले जाती है
वह छोटी गरबीली चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे नदी से बहुत प्यार है।

1. वह चिड़िया जो

वह चिड़िया जो–
चोंच मारकर
दूध–भरे जुंडी के दाने
रुचि से, रस से खा लेती है
वह छोटी संतोषी चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे अन्न से बहुत प्यार है।

जुंडी (ज्वार – बाजरे की बालियाँ – maize -millet
रस –स्वाद taste
संतोषी- धीरजवाली - Having patience
पंख –पर feather wings
अन्न – अनाज- grain

व्याख्या- इस कविता में एक छोटी सी नीले पंखों वाली चिड़िया अपना परिचय दे रही है।

नीली पंखों वाली चिड़िया कहती है कि वह दूध से युक्त अर्थात अधपके जुंडी (ज्वार - बाजरे)के दाने मन से और स्वाद लेकर खाती है। वह संतोषी है , थोड़े- से दाने ही उसके लिए काफी हैं | उस चिड़िया के पंख नीले रंग के हैं , उसे अनाज से बहुत प्यार है। प्रस्तुत पंक्तियाँ हमें अन्न से प्रेम और आदर करने की सीख देती हैं क्योंकि अन्न हमें ताकत देकर जीवन प्रदान करता है।

Grow your own
budgie seeds

वह चिड़िया जो–
कंठ खोलकर
बूढ़े वन–बाबा की खातिर
रस उँडेलकर गा लेती है
वह छोटी मुँह बोली चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे विजन से बहुत प्यार है।

कंठ – गला -throat
वन –जंगल –forest,
रस उँडेलकर – बहुत ही मीठे स्वर में, in a very sweet voice
मुहँबोली -**चिर-परिचित** so called , adopted –well known
विजन– **एकांत ,सुनसान**- lonly
सुरीला –melodious ,sweet

नीले पंखों वाली चिड़िया कहती है कि तेज़ और मधुर (मीठे) स्वर में गाने वाली चिड़िया मैं ही हूँ | मैं सभी की चिर-परिचित अर्थात जानी - पहचानी हूँ। मेरे सभी गीत बूढ़े बाबा के लिए हैं। मैं एकांत से बहुत प्यार करती हूँ | मानव स्वभाव रूपी यह चिड़िया प्रकृति से प्रेम करने तथा एकांत में भी प्रसन्न रहने का संदेश देती है । अर्थात इस नन्ही चिड़िया को उस वन से भी बहुत प्यार है जिसमें वह रहती है तथा अपने बूढ़े वन बाबा और उसके वृक्षों के लिए वह अपने मीठे कंठ से मधुर और सुरीला गीत गाती है। उसे एकांत में रहना पसंद है ।

वह चिड़िया जो

वह चिड़िया जो—
चोंच मारकर
चढ़ी नदी का दिल टटोलकर
जल का मोती ले जाती है
वह छोटी गरबीली चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे नदी से बहुत प्यार है।

गर्व –proud
साहसी- courageous
चढ़ी नदी - उफ़नती हुई नदी – जल से भरी हुई नदी , flooded river टटोलकर – खोजकर in the search of हिम्मत- courageगरबीली -गर्वीली, proudly संदेश-massage, सभ्यता-civilization

इस पद में कवि कहना चाहते हैं कि यह नीले पंखों वाली छोटी सी चिड़िया अत्यंत साहसी और गर्व से भरी हुई है | **नीले पंखोंवाली चिड़िया कहती है कि मैं वही छोटी चिड़िया हूँ जो उफ़नती नदी में से भी पानी की मोती रूपी बूँद अपनी चोंच में लेकर उड़ जाती हूँ | मुझे अपने इस साहसपूर्ण कार्य पर बहुत गर्व है | मुझे नदी से भी बहुत प्यार है | उपर्युक्त पंक्तियों में चिड़िया विपरीत परिस्थितियों में भी हिम्मत ना हारने की प्रेरणा देती है | यह नदी से प्रेम करने का संदेश देती है क्योंकि नदियाँ सभ्यता के विकास में प्राचीन काल से ही हमारी सहायक रही हैं।**

Vah Chidiya Jo Poem Summary - वह चिड़िया जो कविता का सार : वह चिड़िया जो कविता कवि केदारनाथ अग्रवाल जी की एक प्रसिद्ध कविता है । इस कविता में लेखक ने नीले पंखों वाली एक छोटी सी संतोषी चिड़िया के स्वभाव के बारे में बताया है। उसे प्रकृति की हर वस्तु से अत्यंत लगाव है। कवि कहते हैं कि नीले रंग की छोटी चिड़िया को अन्न से बहुत प्यार है। वह बहुत ही रुचि और संतोष के साथ दूध भरे ज्वार के दाने खाती है। उसे अपने वन से भी बहुत प्यार है। वह बूढ़े वन में घूम-घूम कर अपने मीठे स्वर में प्यारे गीत गाती है। उसे एकांत और नदी से बहुत प्यार है। उसे स्वयं पर गर्व है । वह अत्यंत साहस के साथ उफनती नदी में से अपनी चोंच में पानी की बूंदें भर लाती है।

शब्दार्थ

जुंडी - ज्वार – बाजरे की बालियाँ – Maize - millet

रस –स्वाद taste

संतोषी- धीरजवाली - patience

अन्न – अनाज- grain

कंठ – गला -throat

वन –जंगल –forest,

रस उँडेलकर – बहुत ही मीठे स्वर में, in a very sweet voice

विजन – एकांत , सुनसान - lonely – a quite place

चढ़ी नदी - उफ़नती हुई नदी – जल से भरी हुई नदी , flooded river

टटोलकर – खोजकर in the search of

गरबीली-गर्वीली , proudly

****

अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

पाठ– 1 वह चिड़िया जो

प्रश्न 1- यह कविता चिड़िया के माध्यम से क्या सीख देती है ?

उत्तर - यह कविता चिड़िया के माध्यम से प्रेम और उमंग से जीने की सीख देती है |

प्रश्न 2 - चिड़िया किसकी खातिर गाती है ?

उत्तर - चिड़िया बूढ़े वन-बाबा के खातिर गाती है |

प्रश्न 3 - चिड़िया के पंख कैसे हैं ?

उत्तर - चिड़िया के पंख नीले हैं |

प्रश्न 4- चिड़िया कौन - से मोती ले जाती है ?

उत्तर - चिड़िया जल के मोती ले जाती है |

प्रश्न 5 - चिड़िया कैसे गाती है ?

उत्तर - चिड़िया कंठ खोलकर गाती है|

प्रश्न-6 चिड़िया को क्या पसंद है ?

उत्तर चिड़िया को अनाज (ज्वार- बाजरे) के दाने पसंद हैं ।

प्रश्न-7 जुंडी का क्या अर्थ है ?

उत्तर जुंडी का अर्थ है ज्वार- बाजरे की बालियाँ ।

प्रश्न-8 चिड़िया ने स्वयं को संतोषी क्यों कहा है ?

उत्तर चिड़िया ने स्वयं को संतोषी इसलिए कहा है क्योंकि चिड़िया को जो भी मिल जाता है, वह उतने में ही संतोष कर लेती है।

प्रश्न- 9 - चिड़िया किसका दिल टटोलती है ?
उत्तर चिड़िया नदी का दिल टटोलती है।
प्रश्न- 10 - चिड़िया द्वारा खाए जाने वाले दाने किस चीज से होते भरे हैं ?
उत्तर - चिड़िया द्वारा खाए जाने वाले दाने दूध से भरे होते हैं ।
प्रश्न-11 -चिड़िया पुराने जंगल को किस नाम से बुलाती है ?
उत्तर- चिड़िया पुराने जंगल को बूढ़े वन - बाबा के नाम से बुलाती है ।
प्रश्न-12 -चिड़िया जुड़ी के कैसे दाने खाना पसंद करती है ?
उत्तर-चिड़िया जुंडी के अधपके दाने खाना पसंद करती है।
प्रश्न-13- नीले पंखों वाली इस चिड़िया का स्वभाव कैसा है?
उत्तर-नीले पंखों वाली यह छोटी चिड़िया अत्यंत ही संतोषी स्वभाव की है।

लघु उत्तरीय प्रश्न –

प्रश्न 1 - चिड़िया को किससे प्यार है और क्यों ?
उत्तर-चिड़िया को अन्न से प्यार है । वह दूधिया एवं अधपके जुंडी के दाने बड़े चाव से खाती है ।उसे विजन से प्यार है । वह एकांत वन में मधुर स्वर में गाती है, उसे नदी से प्यार है वह नदी की बीच धारा से जल की बूँदें चोंच में लेकर उड़ जाती है ।

प्रश्न 2 – कविता में कैसी चिड़िया का वर्णन है?
उत्तर- कविता में नीले पंखों वाली छोटी- सी चिड़िया का वर्णन है | वह संतोषी है , थोड़ा अन्न उसके लिए काफ़ी है । वह मुहँबोली है ।उसे एकांत पसंद है और अपने साहस पर उसे गर्व है ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

प्रश्न 1 - कविता के अनुसार चिड़िया का कैसा चित्र आपके मन में उभरता है?
उत्तर- 'वह चिड़िया जो' कविता को पढ़कर हमारे मन में चिड़िया का यह चित्र उभरता है –

i चिड़िया के पंख चमकीले , नीले और सुंदर हैं |
ii चिड़िया का आकार छोटा है |
iii वह जंगल में गीत गाती है |
iv वह खेतों में अन्न खाती है |
v वह नदी का पानी पीती है |

प्रश्न 2 - चिड़िया ने स्वयं को गर्वीली क्यों कहा है ?
उत्तर- चिड़िया ने स्वयं को गर्वीली इसलिए कहा है क्योंकि वह जंगल में अकेली रहकर अपना जीवन व्यतीत करती है , उसे एकांत पसंद है | वह स्वयं ही अपना भोजन जुटाने निकल पड़ती है | जब उसे प्यास लगती है तब वह तीव्र वेग वाली नदी से जल पीती है | वह अपनी सारी आवश्यकताएँ स्वयं ही पूरी कर लेती है |